महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

महर्षि ज्योतिष प्रमाणपत्रम्

क्रमांक	पेपर कोड	पेपर क्रमांक	पेपर नाम
1	1DJYOTISHPP1	I	महर्षि ज्योतिष (होरा)
2	1DJYOTISHPP2	II	महर्षि ज्योतिष (सिद्धान्त)
3	1DJYOTISHPP3	III	महर्षि ज्योतिष (संहिता)
4	1DJYOTISHPP4	IV	संस्कृत तथा महर्षि वेद विज्ञान

WWW.DDE

महर्षि एकवर्षीय प्रमाणपत्र परीक्षा पाठ्यक्रम

प्रथम प्रश्नपत्र

महर्षि ज्योतिष (होरा)

प्रथम इकाईः–

महर्षि ज्ञान के संदर्भ में ज्योतिष । ज्योतिष की प्रमुख शाखायें ।ज्योतिष और मानव जीवन। ज्योतिष शास्त्र का काल विभाजन।

संक्षिप्त परिचय

अन्धकारयुग। उदयकाल। आदिकाल। पूर्वमध्यकाल। उत्तरमध्यकाल। आधुनिक काल।

द्वितीय इकाई :–

सृष्टिक्रमवर्णनाध्याय। ग्रन्थ का उपक्रम। सृष्टिक्रम का वर्णन। अवतारक्रमवर्णनाध्याय। परमात्मा के अंशावतार। नवावतार का वर्णन। ग्रहस्वरूपवर्णनाध्याय। ग्रहादिसाधनाध्याय।

तृतीय इकाई :–

राशिशीलाध्याय। कालपुरूष के अंग विभाग। राशियों की चरादि संज्ञा। राशियों के स्वरूप आदि कथन।

चतुर्थ इकाई :–

षडवर्ग ज्ञान। लग्न। होरा। द्रेष्काण। नवमांश। द्वादशांश। त्रिशांश।

पंचम इकाईः–

भावविवेचाध्याय। तन्वादि भावों से विचारणीय विषय। भावफलों का शुभाभत्व। तनुभावुलाध्यायं से व्यवभाव फलाध्याय पर्यन्त। महर्षि ज्योतिष में ग्रहबाधा निवारण के उपाय।

भावातीत ध्यान एवं सिद्वि। यज्ञ और अनुष्ठान। रत्न चिकित्सा। मंत्र चिकित्सा।

संन्दर्भ ग्रन्थः–

भारतीय ज्योतिष। बृहत्पाराशर– होराशास्त्र।

द्वितीय प्रश्नपत्र

महर्षि ज्योतिष (सिद्धान्त)

प्रथम इकाई :–

ईश्वरस्तुतिः। मयासुर का सूर्यदेव की आराधना। सूर्य सिद्धान्त की प्राचीनता तथा समयय का भेद। काल निरूपण से दिव्य दिन कथन पर्यन्त। वर्ष प्रमाण से संध्याकाल का प्रमाण तक। मनु प्रमाण से ब्रह्मा की गतायु प्रमाण तक।

द्वितीय इकाईः–

सृष्टि रचनाकाल से सूर्यादिग्रहों के भगण तक। नक्षत्रों के भगण से ग्रहों के सावन दिन पर्यन्त। सौरमास, चान्द्रमास तथा अधिमास स्वरूप। अवम और सूर्य सावन का स्वरूप। सावन दिन प्रमाण और चांद दिन प्रमाण। अधिमास संख्या और अवम संख्या।

तृतीय इकाई :–

सौरमास संख्या और कुदिन संख्या। एक कल्प सूर्यादि ग्रहों के भगण से सावन दिन आदि लाने का प्रकार। एक कल्प में चंन्द्र के बिना सूर्यादि ग्रहों के मन्दोच्चों की तथा पातों की संख्या। सृष्ट्यिादि से कृतयुगान्तपर्यन्त गतवर्षो का लाना, अहर्गण का आनयन तथा वारेश जानने का प्रकार। मासपति तथा वर्षपति का आनयन। सूर्यादि ग्रहों का आनयान।

चतुर्थ इकाई :–

विजय आदि सम्वत्सर का आनयन। सूर्याचन्द्रमसोः युगम्। सूर्यचन्द्र युग के भगण। भूव्यास तथा भूपरिधि का प्रमाण। स्वदेशी स्पष्ट भूपरिधि साधन। देशान्तर साधन।

पंचम इकाईः–

देशान्तर का ग्रहो में संस्कार । रेखापुर कथन। प्रकारान्तर से देशान्तर का साधन। बार प्रवृत्ति का समय ज्ञान। ग्रहों का तात्कालिकीकरण। चन्द्र आदि ग्रहों के परम् विक्षेप। पंचाग ज्ञान, जन्मकुण्डली मिलान एवं मंगल दोष परिहार।

संन्दर्भ ग्रन्थ :–

सूर्य सिद्धान्त मध्यमाधिकार सम्पूर्ण। मुहूर्त चिन्तामणि।

तृतीय प्रश्नपत्र

महर्षि ज्योतिष (संहिता)

प्रथम इकाईः–

मंगलाचरण से लेकर शास्त्रोपनयन पर्यन्त। सम्वतसराधिपति से लेकर वर्षेश आदि का फल। रविचार, चन्द्रचार, भौमचार, बुधचार। गुरूचार, शुक्रचार, शनिचार एवं राहुचार से केतुचार पर्यन्त। नवप्रकार का वर्षमान, प्रत्येक का उपयोग । सम्वत्सरों के नाम से लेकर द्वादश मासों के नाम पर्यन्त। ज्योतिष संहिताओं का सामान्य परिचय।

द्वितीय इकाईः–

प्रतिपदादि तिथियों के स्वामी। तिथियों की नन्दादि संज्ञा से लेकर पक्षरन्ध्रतिथि पर्यन्त। निसिद्ध कर्म। पूर्णिमाद तथा अमावश्या की संज्ञा से लेकर अखण्ड तिथि एवं मुहूर्त प्रमाण तकं। सूर्यादिवारों में कर्त्तव्य कर्म। ग्रहों का चर स्थिर आदि स्वभाव से वार प्रवेश पर्यन्त।

तृतीय इकाईः–

ग्रह बल से कार्य सिद्धि से ग्रहों के वर्ण तक। कुलिक यमघण्ट से होराकाल कथन तक। होरा परत्व से कर्त्तव्य कर्म। नक्षत्रों के स्वामी से लेकर अधोमुख संज्ञक नक्षत्र में कर्त्तव्य कर्म। निर्यड्कुख नक्षत्र से चर, मृदु, तीक्ष्ण संज्ञक नक्षत्र तक। कर्णवेध मुहूर्त से हल प्रवहण मुहूर्त तक।

चतुर्थ इकाईः–

हलच क्र से नक्षत्र परक वृक्ष और उनका पूजन एवं शान्ति। योगों के स्वामी व्यतिपातादिकों में वर्ज्य घटी। एकार्गल दृष्टिपात दोष एवं अभिजित नक्षत्र की गणना। करणों के स्वामी और उनका फल। भद्रा में शुभाशुभ विचार। भद्राचक्र और उसका फल।

पंचम इकाई :–

शुभाशुभ मुहूर्त, दिवा एवं रात्रि मुहूतं विचार। अभिजित मुहूर्त, रवि योग और उसका फल। भूकम्प आदि योग से समवर्तक योग तक। आनन्दादि 28 योग , जानने की रीति। नक्षत्र तिथि योग से शुभाशुभ एवं दग्धयोग पर्यन्त (पंगुयोग) वार नक्षत्रज योग विचार।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

नारद संहिता।

चतुर्थ प्रश्नपत्रम्

संस्कृत तथा महर्षि वेद विज्ञान

इकाई प्रथमः–

वेद विज्ञान का सामान्य परिचय। वेद विज्ञान का स्वरूप एवं विषय। अपौरुषेयता। भावातीत ध्यान एवं चेतना।

इकाई द्वितीय :–

संहिता, ऋषि, देवता एवं छंद की अवधारणा। ऋग्वेद से उपनिषद् तक के क्षेत्रों का सामान्य परिचय। मन्त्रद्रष्टा ऋषियों के नाम। शरीर में इनके स्थान। आरण्यक से प्रातिशाख्य तक के क्षेत्रों का सामान्य परिचय। चेतना स्पन्दनों का गुण।

इकाई तृतीयः–

निर्धारित विषयों के ग्रन्थों का आनपूर्वी पाठ।

इकाई चतुर्थ :–

शब्दों का भेदात्मक परिचय, अकार–आकार–इकार–उकारान्त शब्दों का तीनों लिगों में रूप विवरण। (रामं–रमा–फल, हरि–मति–दधि, गुरू–वधु) । विशेषण शब्दों का परिचयर एवं भेद एवं कारक का सामान्य परिचय। अव्यय शब्दों का परिचय एवं भेद। सर्वनाम शब्दों का परिचय एवं युष्मद अस्मद् तत् शब्दों का रूप विवरण।

इकाई पंचम :–

सन्धियों का परिचय एवं भेद। लकारों का भेद परिचय, भू–अस्–एध् धातुओं का रूप 5 लकारों में। (लट्, लिट्, लृट्, लोट्, लिङ्) संस्कृत सम्भाषण। निबन्ध रचना।

पाठ्यग्रन्थाः–

प्रमाणपत्र परीक्षा में निर्धारित वैषयिक संहितायें (ग्रन्थ)।

अनुवाद चन्द्रिका – डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

संस्कृत स्वयं शिक्षक	.	श्रीपाद दामोदर सातवलेकर।
बृहद् अनुवाद चन्द्रिका	.	श्री चक्रधर सिंह नोटियाल।
ऋजु पाणिनीयम्	.	श्री गोपाल शास्त्री।
धातु रूपावली	.	श्री गोपाल शास्त्री।
रूप चन्द्रिका	.	डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी।
शब्द रूपावली	.	डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी।